Date - 05/02/2025
Time - 10. AM

डॉ मनोज कुमार सिंह
मनोविज्ञान विभाग
महाराजा कॉलेज आरा

P.G - 2nd Semester
Paper - CC - 7
Psychopathology

Topic :-

मनोविकृतिविज्ञान का आधुनिक उद्भव
(Modern Origin of Psychopathology)

पिनेल (Pinel) एवं टर्क (Turk) द्वारा की गयी मानवीय उपचार प्रविधियों (Human treatment methods) ने असामान्य मनोविज्ञान के इतिहास में पूरे संसार में एक हलचल सी मचा दी। अमेरिका में इस हलचल की अभिव्यक्ति (Reflection) बेन्जामिन रश (Benjamin Rush, 1745-1813) के कार्यों द्वारा होती है। इन्होंने पेनसिलवानिया अस्पताल (Pennsylvania Hospital) में 1783 में कार्य प्रारम्भ किया और 1796 में मानसिक रोगियों को मानवीय उपचार करने के उद्देश्य से एक अलग रोगी कक्ष बनवाया जहाँ उनके रूचिकर कार्यों एवं मनोरंजन के साधन की सुविधा प्रदान किया । 1812 में उन्होंने मनोरोगविज्ञान पर पहली पुस्तक भी प्रकाशित की जिसमें मानसिक रोगियों के उपचार को अधिक आधुनिक बनाने पर बल डाला। इन सब प्रयासों के बावजूद चिकित्सा सम्बंधी उनका विचार अधिक लोकप्रिय नहीं हो पाया क्योंकि इस सिद्धान्त में नक्षत्रशास्त्र (Astrology) का समावेश था तथा उपचार की प्रमुख प्रविधि रक्तमोचन (Blood Letting) तथा भिन्न-भिन्न तरह के शोधक (Purgatives) थे जो स्पष्टतः अमानवीय विधियाँ ही थीं।

अमेरिका में 19वीं शताब्दी के प्रारम्भ में एक महिला शिक्षिका डोराथिया डिक्स (Dorothea Dix, 1802-1887) ने एक आन्दोलन चलाया जो मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान आन्दोलन (Mental hygiene movement) के नाम से प्रचलित हुआ। इस आन्दोलन ने मानसिक रोगियों को बन्धन मुक्त कर दिया। उनकी नैतिकता (Morality) के स्तर को ऊँचा करने के लिए कुछ स्वीकारात्मक क्रियाएँ (Positive activities) जैसे खेती-बाड़ी, बढ़ईगिरी आदि कार्यों पर भी बल डाला गया। डिक्स के अथक प्रयास से अमेरिका के अलावा कनाडा, स्कॉटलैण्ड के मानसिक अस्पतालों की स्थितियों में भी मानवीय सुधार किए जाये। अपने जीवन काल में इन्होंने करीब 32 मानसिक अस्पताल खुलवाए।

अमेरिका के अलावा इस काल (1800-1950) में फ्रांस (France), जर्मनी (Germany) तथा अस्ट्रेलिया (Austria) में भी असामान्य मनोविज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किए गये। जहाँ तक फ्रांस में ऐसे कार्यों का प्रश्न है, एनटोन मेसमर (Anton Mesmer 1734-1815) का नाम सबसे पहले लिया जाता है। ये वियेना (Vienna) के एक चिकित्सक थे तथा पैरासेलासस (Paracelsus, 1493-1541) तथा हेलमॉन्ट (Helmont, 1597-1644) के विचारों से काफी प्रभावित थे। इनका विश्वास था कि नक्षत्रों से बिजली या चुम्बकत्व जैसी धारा निकलती है जो सदा विश्व में बहती रहती है और इसका एक अंश मानव शरीर के भीतर चला जाता है जिसे प्राणी चुम्बकत्व कहा जाता है। इनका विश्वास था कि असामान्यता इसी प्राणी चुम्बकत्व के अभाव के कारण होता है। इन्होंने असामान्यता के

उपचार के लिए जिस प्रविधि का सहारा लिया उसे मेस्मरिज्म (Mesmerism) कहा जाता है। मनस्नायुविकृतिमनोविकृति (Psychoneurosis) के उपचार में मेस्मरिज्म काफी प्रभावी प्रविधि साबित हुआ। यह प्रविधि इतनी अशिष्ट (Crude) थी कि वियेना के बहुत से मेडिकल चिकित्सक उनके खिलाफ हो गये और अन्त में उन्हें अपना वतन छोड़कर 1778 में पेरिस जाना पड़ा।

पेरिस में भी मेसमर ने प्राणी चुम्बक पर अपना काम जारी रखा। यहाँ भी इस चिकित्सा के रहस्य को बतलाने के लिए चिकित्सक वैज्ञानिक तथा फ्रांस की सरकार परदबाव डाला लेकिन मेसमर ने रहस्य बतलाने से इन्कार कर दिया। परिणामतः उन पर ढोंगी होने का आरोप लगाया गया जिससे वे पेरिस छोड़कर स्वीट्जरलैंड चले गये जहाँ उनकी मृत्यु 1815 में हो गयी। मेसमर मर गया पर मेस्मरिज्म जीवित रहा। इनकी मृत्यु के करीब 25 वर्षों बाद ब्रिटिस चिकित्सक जेम्स ब्रेड (James Braid 1795-1860) ने 1843 में मेस्मरिज्म के आलोक में सम्मोहन (Hypnotism) की खोज की। सम्मोहन से उनका तात्पर्य संसूचन प्रभाव (Suggestive effect) से था। इसके बाद शाकों (Charcot, (1825-1893)) जो पेरिस शहर के सबसे बड़े अस्पताल में एक प्रतिभाशाली तंत्रिका विज्ञानी (Neurologist) थे तथा जिन्होंने 1853 में पेरिस विश्वविद्यालय (Paris University) से M.D. की उपाधी प्राप्त की थी, ने उन्माद (Hysteria) के लक्षणों का वर्गीकरण किया। हिस्ट्रीरिया के उपचार में उन्होंने सम्मोहन विधि का सहारा लिया। शाको ने 1868 में त्रंत्रिका विज्ञान से सम्बद्ध एक निदानगृह (Neurological Clinic) को स्थापित किया जहाँ विश्व के विभिन्न भागों से छात्र विशेष अध्ययन के लिए आने लगे जिसमें वियेना से फ्रायड तथा फ्रांस से जैनेट काफी प्रतिभाशाली छात्र थे।

फ्रांस के अलावे जर्मनी में भी इस काल (1800-1950) में कुछ ऐसे कार्य हुए जो असामान्य मनोविज्ञान के इतिहास में काफी उल्लेखनीय है। विलिहेल्म ग्रिसिंगर (Wilhelm Griesinger, 1817-1868) तथा ऐमिल क्रेपलिन (Emil Kraeplin. 1855-1926) के कार्य यहाँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इन दोनों चिकित्सकों ने मानसिक रोग के दैहिक कारणों की खोज की और कहा कि शारीरिक रोग के समान ही मानसिक रोग का कारण भी विशेष अंग में विकृति का होना होता है। इसे असामान्य मनोविज्ञान के इतिहास में असामान्यता का अवयवी दृष्टिकोण (Organic viewpoint of abnormality) कहा जाता है। ऐमिल क्रेपलिन का योगदान ग्रिसिंगर के योगदान से कहीं बढकर है क्योंकि इन्होंने विभिन्न लक्षणों के आधार पर मानसिक रोग को अलग-अलग प्रकारों में बाँटा तथा प्रत्येक वर्ग के रोग के लिए उसके प्रमुख लक्षणों तथा उत्पत्ति के कारणों का विस्तृत वर्णन किया।

19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में आस्ट्रीया में भी सिगमण्ड फ्रायड (Signund Freud, 1856-1939) द्वारा जो एक महत्वपूर्ण तंत्रिका विज्ञानी (Neurologist) तथा मनोरोगविज्ञानी (Psychiatrist) थे, ने असामान्य मनोविज्ञान में अतुलनीय योगदान दिया। इन्होंने मानसिक रोग के कारणों की व्याख्या में दैहिक कारकों की अपेक्षा मनोवैज्ञानिक कारकों को अधिक महत्व दिया। असामान्य मनोविज्ञान के क्षेत्र में फ्रायड के योगदानों में मुक्त साहचर्य विधि, अचेतन, स्वप्न विश्लेषण, मनोलैंगिक सिद्धान्त, मनोरचनाएँ आदि प्रमुख हैं। फ्रायड ने मनः स्नायुविकृति (Psychoneurousis) के रोगियों पर सम्मोहन का उपयोग करना जोसेफ ब्रियुअर से सीखा। इन्होंने देखा कि सम्मोहित व्यक्ति बिना किसी अवरोध के अपने संवेगों संघर्षों एवं भावनाओं आदि को प्रकट करता है जिसका स्पष्ट एवं सीधा सम्बंध रोगियों के रूग्नावस्था से होता है। इसे फ्रायड एवं ब्रियुअर ने मिलकर विरेचन विधि (Cathartic Method) कहा। इसके बाद 1885 में वे शाकों से शिक्षा प्राप्त कर वियना लौटे। वियना आने के कुछ ही दिनों बाद सम्मोहन के अस्थायी प्रभाव के कारण इन्होंने इसे त्याग कर दिया। अपने अनुभवों एवं रोगियों के निरीक्षण। के आधार पर फ्रायड ने बतलाया कि अधिकतर मानसिक संघर्ष तथा चिंता का स्रोत अचेतन होता है। ऐसे मानसिक संघर्ष, चिन्ता एवं दुखद अभिपेरकों एवं संवेगों को व्यक्ति अपनी चेतना से हटाकर अचेतन में दमित कर देता है। इस प्रक्रिया को इन्होंने दमन (Repression) की संज्ञा दी। इन्होंने यह भी कहा कि दमित अभिप्रेरक एवं इच्छाएँ व्यक्ति के व्यवहार को अचेतन रूप से नियंत्रित करते हैं। अतः व्यक्ति के व्यवहार को समझने के लिए यह आवश्यक है कि दमित इच्छाओं एवं अभिप्रेरकों को समझा जाय और इसे समझने या चेतन स्तर पर लाने के लिए इन्होंने दो विधियों की इजाद की मुफ्त सहचर्य विधि (Free scociation method) तथा स्वप्न विश्लेषण (Dream analysis)। इन विधियों के सहारे कार्य करके उन्होंने 1900 में अपनी सबसे उत्तम पुस्तक 'दी

इन्टरप्रेटेशनऑफ ड्रीम (The Interpretation of Dream) का प्रकाशन किया। मानसिक रोगों की चिकित्सा के लिए इन्होंने मनोविश्लेषण विधि का सहारा लिया जिसमें अचेतन में दमित इच्छाओं को मुफ्त साहचर्य तथा स्वप्न विश्लेषण विधि द्वारा चेतना स्तर पर लाकर उसकी सार्थकता से व्यक्ति को अवगत कराया जाता था। मनोविश्लेषण की सफलता संसार के कोने-कोने तक फैल गयी परिणामतः पूरे विश्व से अनेक छात्र इनसे शिक्षा ग्रहण के लिए आने लगे। इन छात्रों में युंग, अर्नेस्ट जोन्स, ए० ए० विल, एल्फ्रेड एडलर, आदि अधिक प्रमुख है। हालांकि बाद में युंग तथा एडलर वैचारिक मतभेद के कारण फ्रायड से अलग हो गये। युंग ने विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान (Analytical Psychology) तथा एडलर ने वैयक्तिक मनोविज्ञान (Individual psychology) की स्थापना की। इन दोनों विज्ञानों के योगदान से असामान्य मनोविज्ञान हमेशा ऋणी रहेगा। इसके बाद आगे चलकर फ्रायड के सिद्धान्तों को मानते हुए कुछ विद्वानों के समूह ने विश्लेषात्मक सिद्धान्त में कुछ परिवर्तन किया जिसे नवफ्रायडवादी कहा गया। 80 वर्ष की अवस्था में हिटलर ने वियेना पर जब आक्रमण किया तो फ्रायड को बंदी बना लिया गया पर ब्रिटेन के बीच-बचाव से इन्हें पुनः छुड़ा लिया गया और वे लंदन चले आए जहाँ 1939 में 83 वर्ष की आयु में इनकी मृत्यु हो गयी।

असामान्य मनोविज्ञान के आधुनिक काल (1801-1950) में एक और मनोरोगविज्ञानी (Psychiatrist) की भूमिका काफी महत्वपूर्ण है। उनका नाम है-एडॉल्फ मेयर (Adolf Meyer, 1866-1950) मेयर के विचारधारा को मनोजैविक दृष्टिकोण कहा जाता है। (Psychobiological viewpoint) कहा जाता है। उनका मानना है कि असामान्य व्यवहार का कारण शारीरिक तथा मानसिक दोनों होता है अतः इसका उपचार मानसिक (Psychogenic) तथा दैहिक (Somatogenic) दोनों आधारों पर किया जाना चाहिए। स्पष्टतः तब इस विचारधारा में क्रेपलिन एवं तथा ग्रिसिंग के दैहिक विचारों एवं फ्रायड के मनोवैज्ञानिक विचारों का एक मिश्रण देखने को मिलता है।

निष्कर्षतः तब यह कहा जा सकता है कि मेयर का विचार था कि असामान्यता को समझने के लिए एक सम्पूर्ण दृष्टिकोण (Holistic approach) अपनाना आवश्यक है।

आज का मनोविकृतिविज्ञान

20वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध (First half) तक मानसिक अस्पताल ही मानसिक रोगियों के उपचार का एक मात्र केन्द्र स्थल बना रहा। परन्तु इसके बाद धीरे-धीरे इन मानसिक अस्पतालों के काले करतूत लोगों के सामने आए और उसके प्रति आम जनता की मनोवृत्ति परिवर्तित होती गयी। अमेरिका के बहुत से अस्पतालों में देखा गया कि वहाँ के रोगियों के साथ अमानवीय व्यवहार इतनी क्रूरता के साथ किया जाता था कि उनका मानसिक रोग कम होने के बजाय बढ़ता ही जाता था। कुछ रोगियों का तो देहान्त भी हो जाता था। परिणामतः मानसिक अस्पताल में रोगियों को रखने के प्रति लोगों की मनोवृत्ति खराब हो गयी। आजकल अमेरिका में इन मानसिक अस्पतालों की जगह सामुदायिक मानसिक स्वास्थ्य केन्द्र (Community Mental health centrers) ने ले लिया है। इन केन्द्रों का मुख्य उद्देश्य मानसिक रोगियों का मानवीय ढंग से उपचार करना है। इन केन्द्रों द्वारा मूलतः पाँच तरह की सेवाएँ दी जाती हैं-चौबीस घंटे आपातकालीन देखभाल (Emergency care), अल्पकालीन अस्पताली सेवा (Short term hospitalisation), आंशिक अस्पताली सेवा (Partial hospitalisation), बाह्य रोगियों की देखभाल (Out-patient care) तथा प्रशिक्षण एवं परामर्श कार्यक्रम। अमेरिका एवं कनाडा में ऐसे केन्द्रों की संख्या काफी अधिक है जिन्हें अपने कार्य के लिए पर्याप्त सरकारी सहायता मिलती है।

अमेरिका एवं कनाडा में आजकल सामुदायिक मानसिक स्वास्थ्य केन्द्र (Community mental health centres) का एक नवीनतम रूप जिसे संकटकाल हस्ताक्षेप केन्द्र (Crisis intervention centre) कहा जाता है, विकसित हुआ है। इन केन्द्रों का मुख्य उद्देश्य मानसिक रोगियों को तुरंत सहायता पहुँचाना होता है। इन केन्द्रों में उपचार के लिए पहले से समय निश्चित करके मिलना जरूरी नहीं है तथा सभी वर्ग एवं आय के लोगों की सहायता के लिए तुरंत कदम उठाया जाता है। आजकल एक नये प्रकार का संकटकाल हस्ताक्षेप केन्द्र भी मानसिक रोगियों के

उपचार में कार्यरत देखा गया है। इसे 'हॉट लाइन दूरभाष केन्द्र' (Hot line telephone centre) की संज्ञा दी जाती है। ऐसे केन्द्रों में चिकित्सक दिन या रात के किसी भी समय दूरभाष से सूचना प्राप्त कर मानसिक रोगियोंका उपचार प्रारम्भ करने के लिए तत्पर रहते हैं। इस तरह का दूरभाष केन्द्र सबसे पहले-पहल लॉस एन्जिल्स (Los Angeles) के चिल्ड्रेन अस्पताल में प्रारम्भ किया गया। ऐसे दूरभाष केन्द्रों की सफलता से प्रभावित होकर अमेरिका के बड़े-बड़े शहरों एवं विश्वविद्यालय कैम्पसों में भी इस तरह का आपात्कालीन सेवा का प्रदान करने वाले केन्द्र अधिकाधिक संख्या में खोले जा रहे हैं। संसार के अन्य देशों में भी इस तरह के केन्द्र तेजी से खुल रहे हैं। भारतीय परिवेश में भी कुछ ऐसी ही देखा जा रहा है।

इस तरह यह स्पष्ट हुआ असामान्य मनोविज्ञान का इतिहास जिसका अध्ययन किया गया है, में काफी उतार-चढ़ाव होते रहा है। प्रारम्भिक काल में अर्थात पूर्ववैज्ञानिक काल में असामान्यता की व्याख्या दैविक प्रकोप एवं पिशाच आधिपत्य के सहारे की जाती थी। आधुनिक युग (1801-1950) में इस विचार की मान्यता समाप्त हो गयी और मानसिक रोग को भी शारीरिक रोग के समान समझा जाने लगा। इसका उपचार भी इस काल में मानवीय ढंग से ही करने पर बल डाला गया। 1950 के बाद के असामान्य मनोविज्ञान में पहले से चले आ रहे मानसिक अस्पताल (Mental hospital) में किये जा रहे उपचार को अमानवीय बताया जाने लगा और लोगों को यह विश्वास हुआ कि मानसिक अस्पताल में भर्ती करने से समस्या घटने के बजाय बढ़ती ही जाती है। परिणामतः आजकल मानसिक, सामुदायिक मानसिक अस्पताल स्वास्थ्य केन्द्र द्वारा प्रतिस्थापित हो गया।